डॉ. बिपिन पाण्डेय

ये खबर हमने पढ़ी है आज के अखबार में।
दे रहे नारा महज जो लोग हैं सरकार में।।

बात पर उनकी फिदा जनता हमारे देश की,
सत्य देखा ही नहीं जिनके कभी किरदार में।

पाल बैठे हैं महज जो कुर्सियों की ख्वाहिशें,
लग रही हैं बोलियाँ उनकी सरे बाज़ार में।

आ गया मौसम चुनावी वोट पाने के लिए,
जा रहे हैं रोज नेता आज कल दरबार में।

देख लगता आँकड़ों को देश जन्नत बन गया,
पर जुदा तस्वीर दिखती हर जगह व्यवहार में।

चंद बातें पूछ लीं जब मुख्तलिफ आवाज़ ने,
बढ़ गईं बेचैनियाँ बेइंतहा रफ्तार में।

बेबसी अशआर में बोलो कहे कैसे ग़ज़ल,
महजबीं को देख शायर खो गया रुखसार में।

मुख़्तार कुकरावी

हर आरज़ू को अपनी रह-ए-यार बेचकर
हम हो गए हैं दिल के गुनहगार बेचकर

बाज़ार ए मिस्र में जो हों यूसुफ की बोलियां
यूसुफ को हम खरीदेंगे घर-बार बेचकर

मेरी बला से कोई तवज़्ज़ो न दे मुझे
क्यों कर उरूज़ पाऊं मैं किरदार बेचकर

खुशियां तलाश करनी हैं मुझको क़दम क़दम
अपने ग़मो को अब सर-ए-बाज़ार बेचकर

मिलने पे जिस से होती थी बातें तमाम रात
ख़ामोश हो गया है वो गुफ़्तार बेचकर

सहने चमन से अब मेरा उकता गया है दिल
सहरा में आ गया हूँ गुल-ओ-ख़ार बेचकर

ISSN:2583-8849